कविता

बाँची बहुत किताबें तुमने...

उषा शुक्ला*

बाँची बहुत किताबें तुमने,
नित्य नये अध्याय पढ़े,

मुझे बाँचना सिखलाने के
नित नूतन उपकरण गढ़े।

बाँचा कभी हमारा मन भी?
उस जुड़ाव की मधुर छुअन भी?

जरा पोथियाँ परे हटाकर,
झाँको नन्हा अंतर्मन भी।

ज्ञान ने हौसलों को दे दिए हैं नये पंख
आओ! हम उतार लाएँ इंद्रधनुष
और टाँग दें उन नौनिहालों के आँगन में
जो... हमारे भविष्य की धरोहर हैं।

© NCERT not to be republished

**वरिष्ठ व्याख्याता*, ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, जबलपुर